समझते हैं।'' वास्तव में भक्तियोग का आचरण तथा कृष्णभावनामृत का विकास किए बिना किसी को भी श्रीकृष्ण का तत्त्वज्ञान नहीं हो सकता। गीता इसका प्रमाण है।

मनोधर्म के द्वारा अथवा वैदिक शास्त्रों पर वार्तालाप करने मात्र से भगवान् श्रीकृष्ण को अथवा उनके रूप, चिद्गुण, नामादि को नहीं जाना जा सकता। उनका ज्ञान केवल विशुद्ध भक्तियोग से हो सकता है। **हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे**—इस महामन्त्र के कीर्तन से भक्तियोग में प्रवृत्त हो कर जो पूर्ण रूप से कृष्णभावना में निरत हो गया है, वह पुरुष ही श्रीभगवान् को तत्त्व से जान सकता है। अभक्त निर्विशेषवादियों की धारणा में श्रीकृष्ण का विग्रह माया-निर्मित है और उनके सब लीला-विलास, रूप आदि तत्त्व भी मायिक हैं। अपनी इसी मान्यता के कारण ये निर्विशेषवादी 'मायावादी' कहलाते हैं। ये परम सत्य को नहीं जानते।

बीसवें श्लोक में स्पष्ट कहा है—'जो कामनाओं से अंधे हो गए हैं, वे मनुष्य ही विभिन्न देवताओं की उपासना में प्रवृत्त होते हैं।' यह स्वीकृत तथ्य है कि श्रीभगवान् के अतिरिक्त ऐसे बहुत से देवता हैं जिनके अपने-अपने लोक हैं (भगवद्गीता ७.२३); और श्रीभगवान् का भी अपना निज धाम है। यह भी उल्लेख है कि देवोपासक भिन्न-भिन्न देवलोकों में गमन करते हैं, जबकि कृष्णभक्त परमधाम कृष्णलोक को जाते हैं। इन स्पष्ट वाक्यों के होते हुए भी मूढ़ निर्विशेषवादियों का हठ है कि परमेश्वर निराकार हैं, और ये सब भगवत्-रूप आरोपण मात्र हैं। क्या गीता के स्वाध्याय से लगता है कि देवता और उनके लोक निर्विशेष हैं? स्पष्ट है कि न तो देवता निराकार हैं और न भगवान् श्रीकृष्ण ही निराकार हैं। वे सभी सविशेष-साकार हैं। श्रीकृष्ण स्वयं भगवान् हैं और उनका अपना लोक है, जैसे देवताओं के भी अपने-अपने लोक हैं।

अस्तु, अद्वैतवादियों का यह तर्क सत्य सिद्ध नहीं होता कि परम सत्य निराकार है, उस पर केवल रूप का आरोपण है। इस श्लोक से स्पष्ट है कि भगवान् पर रूप का आरोपण नहीं है। गीता से यह भी स्पष्ट है कि देवताओं और परमेश्वर श्रीकृष्ण के भिन्न-भिन्न रूप एक साथ विद्यमान हैं। परन्तु भगवान् श्रीकृष्ण के विग्रह में वैशिष्ट्य है, वे सच्चिदानन्द हैं। वेदप्रमाण कहता है कि परतत्त्व **आनन्मय है; अभ्यासात्**, अर्थात् स्वरूपतः निरवधि चिन्मय गुणों का निधान है। गीता में स्वयं श्रीभगवान् का कथन है कि अजन्मा होते हुए भी वे प्रकट होते हैं। पाठक इन सब तथ्यों को गीता से भलीभाँति हृदयंगम करें। श्रीभगवान् को निर्विशेष नहीं माना जा सकता, क्योंकि गीता के वचनों से निर्विशेष अद्वैतवादियों का आरोपणवाद मिथ्या सिद्ध होता है। यह श्लोक प्रमाण है कि परतत्त्व-स्वरूप भगवान् श्रीकृष्ण का अपना विशिष्ट रूप और व्यक्तित्व है।

नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः।
मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम्।।२५।।